दैनिक जागरण कानपुर दे.03/08/2023

मत्स्य व बत्तख पालन कर किसान बढ़ा सकते आय

संवाद सूत्र, सरवनखेड़ा : वर्षा ऋतु के मौसम में किसान खेती करने के साथ साथ मत्स्य व बत्तख पालन कर अतिरिक्त लाभ कमा सकते हैं। विज्ञानी विधि से मछली पालन करने से फायदा होता है। कम पूंजी में इस व्यवसाय को किया जा सकता है, यह बातें कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के विशेषज्ञ डाक्टर शशिकांत ने एडवाइजरी जारी कर बताया।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डा.शशिकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है।

उन्होंने बताया कि विज्ञानी विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्तिवर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।

कम पूंजी में शुरु होता व्यवसाय कर कमा सकते दो से तीन लाख प्रतिवर्ष, जिले में 8716. टन मछली उत्पादन प्रतिवर्ष

इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारों की सफाई कर लें। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फ़रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मत्स्य पालक एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष दो से तीन लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

बुधवार

02 अगस्त, 2023

अंक - 456

मछली पालन के व्यवसाय में हैं अपार संभावनाएं, किसान कम लागत में अधिक आय करें अर्जितः डॉक्टर शशीकांत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फ़रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

Title-code: UPHIN-48963

E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

Thursday 3rd August 2023 | jksingh.hardoi@gmail.com | website: satyakaasar.com

मछली पालन के व्यवसाय में अपार संभावनाएं, किसान कम लागत में अधिक आय करें अर्जित: डॉक्टर शशीकांत

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल

पत्रकार जीतेन्द्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फ़रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ₹ 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

rni no uphin47232

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उई, कन्नौज, फरूखाबाद, एटा मे प्रसारित

क: 189 ● कानपुर, गुरूवार 3 अगस्त 2023 ● पृष्ठ: 8

हिन्दी दैनिक

मछली पालन के व्यवसाय में अपार संभावनाएं

प्रतिवर्ष कमा सकते हैं 2 से 3लाख

उपदेश टाइम्स

कानपुर-सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक

मात्रा में पाई जाती है इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे ?रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

महानगर आज
कानपुर
3 अगस्त 2023

मछली पालन : कम लागत में आमदनी दोगुनी

❑ एक हेक्टेयर तालाब से सालाना दो-तीन लाख तक कमा सकते हैं मत्स्य पालक

(आजसमाचार सेवा)

कानपुर, 2 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाज्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बज्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

तालाब का निरीक्षण करते वैज्ञानिक।

■ मत्स्य पालन के क्षेत्र में है अपार सम्भावनाएं,विशेषज्ञों ने दी राय

अमर भारती
एक उम्मीद
5 संस्करण
, मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com गुरुवार, 03 अगस्त 2023 शक सम्वत् 1945, श्र

मछली पालन के व्यवसाय में अपार संभावनाएं

अमर भारती ब्यूरो।

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है।

किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व

खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फ़रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता छारियता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारियता का संतुलन करता है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ? 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

लखनऊ एंव एटा से प्रकाशित, बुधवार, 03 अगस्त, 2023 पृष्ठ : 8 मूल

मछली पालन के व्यवसाय में अपार संभावनाएं, किसान कम लागत में अधिक आय करें अर्जितः डॉक्टर शशीकांत

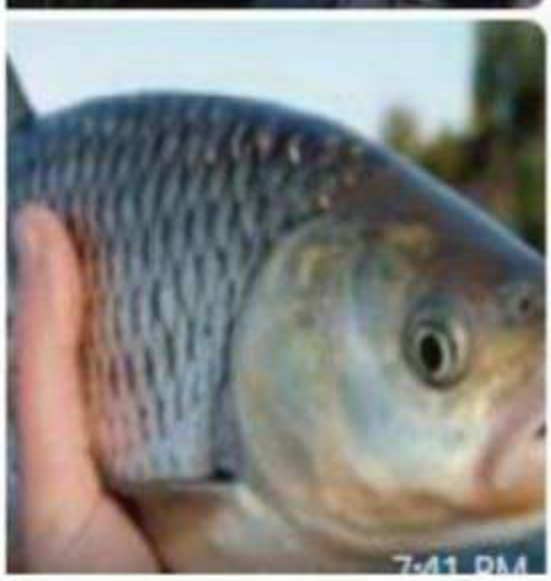

अनवर अशरफ ।कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर शशीकांत ने बताया कि मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनपद कानपुर नगर में उत्पादन 7363.1 टन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात में 8716. 35 टन उत्पादन प्रतिवर्ष है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ–साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली पालने के लिए तालाबों में उपस्थित खरपतवारो की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5–8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली जैसे मेजर कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है उन्होंने बताया की मत्स्य पालक 1 हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ६ 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।